ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

21-08-2026

पवित्रता ही महानता है, यही योगी जीवन का आधार है। जरा भी अंश मात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता के अंश को समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ बनो। सदा यही स्मति रहे कि मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूं।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

Purity is greatness. This is the basis of a yogi life. If there is the slightest trace of impurity towards anyone, there cannot be the remembrance of the pure Father, as He is and what He is. Therefore, finish any trace of impurity in your mind and become completely pure and clean. Constantly have this awareness: I am a worthy of worship soul residing in the temple of this body.